डाक विभाग द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या : UNA/007/20
RNI No. HPHIN/2004/

Best Quality
PVC Agriculture Pipe

0.5" to 1.25" Dia

Resistant to
extreme Heat & Cold conditi

Aranav Udhyog
Mehatpur, Una, HP
Mobile : 98052 38509

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामित्व भोलानाथ कश्यप। छाबड़ा कम्प्यूटरज़ एण्ड प्रिंटर्ज़, जालन्धर से मुद्रित एवं 94, औद्योगिक क्षेत्र मैहतपुर, हि
से प्रकाशित। सम्पादक : भोलानाथ कश्यप

ISSN 2249 5169 ₹ 25

वर्ष 9 अंक 5 फरवरी 2013

समाज धर्म

समाज-धर्म

सामाजिक जागृति को समर्पित मासिक समाचार पत्रिका

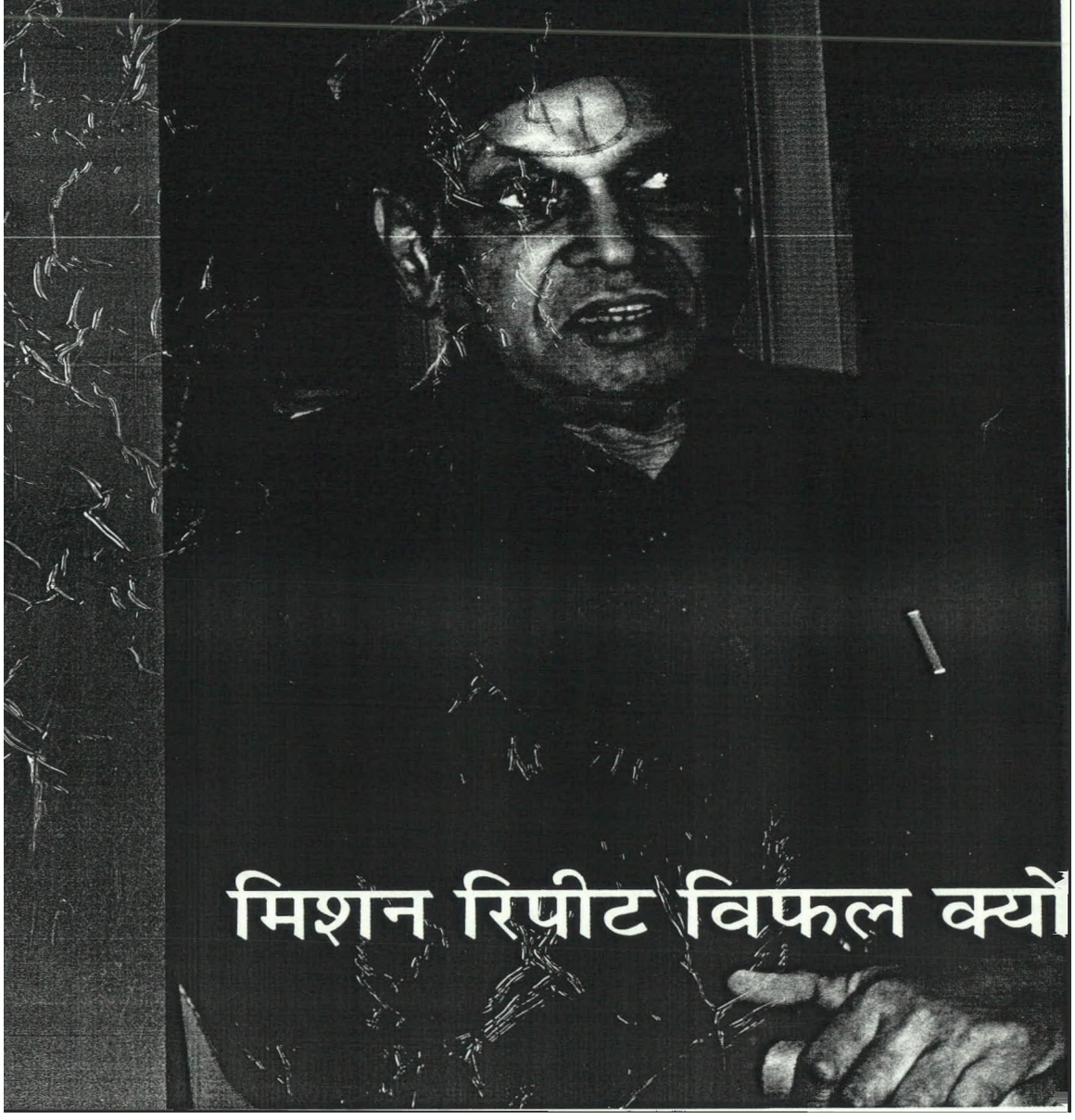

मिशन रिपीट विफल क्यों

सामाजिक विकास एवं मीडिया

- डॉ० जी० शान्ति

संचार मानव के स्वभाव का अभिन्न भाग है। मनुष्य द्वारा शब्द, संगीत, हाव-भाव इत्यादि रूपों से होने वाली संप्रेषण प्रक्रियायें संचार का अंग हैं। संचार मानव समुदाय के जीवन की धुरी है, जिससे मानव के सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण एवं विकास होता है। संचार के बिना मानव के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। संचार ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को सम्भव बनाता है। सामाजिक व्यवहार में संचार अव्यक्त एवं स्पष्ट रूप से भूमिका अदा करता है।

जनसंचार माध्यम : संचार जीवन का आधारभूत सत्य है और वह व्यक्ति के लिए वायु और प्रकाश की तरह ही अपरिहार्य है। आज संचार के जो प्रचलित जन-माध्यम हैं उनको प्राय: तीन वर्गों में रखा जाता है-

1. **शब्द संचार माध्यम** - समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तक।
2. **श्रव्य संचार माध्यम**- रेडियो, आडियो कैसेट, टेपरिकार्डर।
3. **दृश्य संचार माध्यम**- दूरदर्शन, फिल्म, वीडियो, कम्प्यूटर।

जनसंचार माध्यम विज्ञान की प्रगति और तकनीकी विकास के साथ-साथ मानवीय जीवन में परिवर्तन के सर्वशक्तिशाली साधन बन गए हैं। संचार और यातायात के अत्यन्त विकसित साधनों वाले आज के युग में जनसंचार माध्यम भूमण्डल की विस्तृत दुनिया के देशों को जोड़ने और प्रभावित करने वाली बड़ी शक्ति है। समाज, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार तथा मानव-संघर्ष, क्रान्ति, प्रगति, दुर्गतिमय जीवन-सागर में उठने वाले ज्वाला को दिग्दर्शित करने में जन-संचार माध्यम याने मीडिया ही सक्षम है। भ्रम, विभ्रम, अविश्वास, अन्धविश्वास, अंधेरगर्दी को मिटाकर असभ्य को सभ्य, संकीर्ण को उदार एवं नर को नारायण बनाने वाले मीडिया ही नूतनतम घटनाओं के उद्घोषक, वैचारिक आन्दोलन के अभिव्यंजक और नये जीवन-दर्शन के वाहक हैं।

मीडिया और समाज : समाज में व्याप्त दोहरा जीवन, दोहरी नीतियाँ, ढोंग, अंधविश्वास, मदान्धता को मिटाने में मीडिया अहं भूमिका निभाती है। संचार

मानव की प्रगति के प्रचार-प्रसार का प्रमुख माध्यम है, जो दानव को मानव बना सकता है। विकासशील राष्ट्र और जागृत समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक शोधन में मीडिया का योगदान अविस्मरणीय है। नई सूचनाओं से व्यक्ति और समाज की मानसिकता को विस्तृत बनाना, उनकी कामना को स्वस्थ रूप देना, उनकी प्रवृत्तियों, अभिरुचियों को समाज-हित में निर्मित करना- ये सब मीडिया से ही सुलभ हैं।

मीडिया और समाज का अटूट सम्बन्ध है। मीडिया के प्रमुख दायित्व निम्नलिखित हैं-

1. सामाजिक जनमत को अभिव्यक्ति देना।
2. समाज को उचित दिशा निर्देशित करना।
3. जन-जन को स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री देना।
4. सामाजिक कुरीतियों को मिटाना।
5. जनता को उनके अधिकारों बारे समझना।
6. सरकारी नीतियों का विश्लेषण एवं प्रसारण करना।
7. राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ करना।
8. उद्योग-जगत की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाना।
9. सर्वधर्म समभाव एवं सौहार्द-भाव को पुष्ट करना।
10. संकटकालीन परिस्थितियों में राष्ट्र का मनोबल बढ़ाना।
11. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का प्रसार करना।

समाज के जर्जर, रुग्ण और गलित अंगों की शल्य क्रिया द्वारा उनकी विकृतियों को दूर कर जन-मानस में मंगलकारी मूल्यों की प्रतिष्ठापना ही मीडिया का लक्ष्य है।

नयी शताब्दी में मीडिया का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। मीडिया आज शक्ति का केन्द्र बन गया है। कहा जाता है कि यह मीडिया का युग है और जनसंचार का संचार, जन-जन तक व्याप्त है। इस प्रकार मीडिया जन माध्यम है और सीधे विश्व समाज से जुड़ा है। अब हर दिन व्यक्ति मीडिया के घेरे में रहता है। सुबह तो अखबार के बिना उसका दिन ही आरंभ नहीं होता। दूरदर्शन तो डिजिटल हो रहा है और अब सैकड़ों चैनल में से किसे देखना और चुनना यह भी समस्या बन गई है।

इंटरनेट तो और भी तेजी से बदल रहा है। अब तो आडियो और वीडियो और यहाँ तक कि उसका पाठ अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच रहा है। इन्टरनेट तो अब व्यावसायिक भी हो गया है और ई-मेल की तरह ई-कॉमर्स ने विज्ञापन दुनिया को ही बदल दिया है। लोग अपने ब्लॉग बना रहे हैं, वेबसाइट बन रही हैं, अधिक से अधिक चैनल हैं, चयन के विकल्प हैं यानि अधिक से अधिक

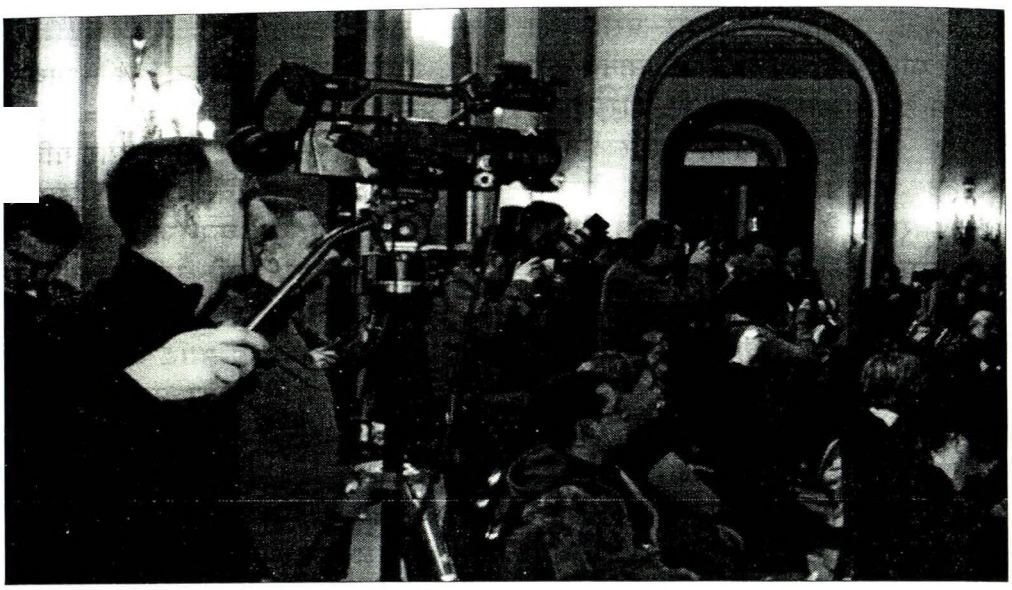

मीडिया है। मीडिया के सारे मुद्दे सामाजिक संदर्भ में ही उठते हैं, क्योंकि समाज में व्यक्ति से लेकर सत्ता संगठन तक सबका समावेश हो जाता है अब समाजीकरण की समस्याएं हैं और इसकी प्रक्रिया में ही मूल्यों, विश्वासों, संस्कृति इन सभी का आभ्यंतरीकरण होता है।

आज विश्व में बच्चों से बुजुर्गों तक स्वतंत्रता के अर्थ में सारे ज्ञान-विज्ञान समा गए हैं। समाजिकरण की प्रक्रिया के साथ मीडिया इतना जुड़ गया है कि हमारी सामाजिक भूमिकाओं का भी वह निर्धारण कर रहा है। सारे जीवन भर यह सामाजिक प्रक्रिया चलती रहती है। मास मीडिया का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बड़ा महत्व है और वह जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। मीडिया ने अपना एक समाज बना लिया है, जिसे मीडिया समाज भी कहा जा सकता है। आज के समकालीन समाज में मीडिया लोगों की निजी जिन्दगी और उनके जनसम्बन्धों से जुड़ता है और उसमें अपनी एक व्यापक भूमिका का निर्वाह करता है। दूरदर्शन के अलग-अलग चैनल हैं, जिनपर अलग-अलग तरह से चीजें सामने रखी जाती हैं।

मीडिया में विजुअल का महत्त्व इतना अधिक है कि वस्तु के साथ तकनीक का समावेश भी यथार्थ के रूप में सामने आता है। अब एक विशाल, जनमाध्यम है, जिसका सामना कभी भी मानव इतिहास में नहीं मिला। अब हमारी हर साँस में मीडिया होता है। इसका प्रसार अत्यन्त व्यापक है, यहाँ तक कि विशाल

समाज, राजनीति और वित्त व्यवस्था को समझने के लिए भी मीडिया का सहारा लेना पड़ता है। संसार में मीडिया का जो अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य है, उसमें राजनीति और समाज दोनों का ही महत्व मीडिया से जुड़ा है। जैसे-जैसे हमने औद्योगिक प्रगति की है, विज्ञान ने हमें नित नवीन सुविकसित संचार माध्यम प्रदान किए हैं। हमारी जैसी आवश्यकताएँ हैं, हम उनके अनुसार इन संचार माध्यमों का उपयोग कर लेते हैं। सामान्य वार्तालाप और पत्र से लेकर टेलीफोन, मोबाईल फोन, रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, इन्टरनेट, सीडी. तक न जाने कितने ही संचार माध्यम हैं, जो सूचना के प्रसार का काम कर रहे हैं। इन्हें संयुक्त रूप से सूचनातंत्र कहा जाता है।

मीडिया से जनसामान्य तक आवश्यक जानकारी पहुँचती रहती है। इससे लोगों को अपने समाज के प्रभावशाली सदस्य के रूप में जीने में मदद मिलती है तथा सामाजिक सम्बन्ध विकसित होते हैं। मीडिया से बौद्धिक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है, जिससे व्यक्ति का बौद्धिक विकास तथा चरित्र निर्माण संभव होता है। मीडिया में सांस्कृतिक तथा कलात्मक रचनाओं के प्रसार द्वारा अतीत की गौरवशाली परम्पराओं को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मीडिया सामूहिक सत्ता तथा समुदाय के लिए एक अनिवार्य अपेक्षा बन गई है। वह समाज पूरी तरह से जीवन्त नहीं बन सकता, जिसके लोगों को ढंग से राजनैतिक मामलों, विदेशी तथा स्थानीय घटनाओं या अपने परिवेश के बारे में सही और स्पष्ट जानकारी नहीं है। सरकारी तंत्र को भी सफलतापूर्वक प्रशासन चलाने के लिए देश के सभी कोनों की यथार्थ जानकारी व समस्याएँ जानना अनिवार्य होता है, जिसकी पूर्ती संचार माध्यमों से ही संभव है। विकास और संचार एक दूसरे के पूरक हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि समाज के चतुर्दिक विकास के लिए 'मीडिया' आवश्यक है। ●

- असिस्टेण्ट प्रोफेसर
श्री अभिरामी इल्लम, 2/129बी 2 वानप्रस्था रोड,
वडवल्लि, समीप अन्नपूर्णा फूड्स,
कोयम्बतूर-641041 तमिलनाडु

सबूत

अदालत - कैसे मानें कि आप दोनों भाई-भाई हैं?
हुजूर! भाई भाई न होते तो अदालत क्यों चढ़ते?